SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

# परंपरा' आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता एक विश्लेषण

निर्देशक
**प्रो. रेखा चौधरी**
(हिंदी विभाग) ए के पी (पीजी) खुर्जा बुलंदशहर

शोधार्थी
**योगेश सिंह**
(हिंदी विभाग) ए के पी (पी जी) खुर्जा बुलंदशहर
सम्पर्क सूत्र - 9548216846

आदिकाल से ही परंपरा भारतीय समाज में सांस्कृतिक निरंतर एकता का प्रतीक रही है भारत गांव का देश कहा जाता है कृषि और ऋषि परंपरा यहां की मुख्य पहचान रही है मनुष्य जो कुछ भी अपने बड़े बुजुर्गों से सीखते है वही विरासत में आगे भी पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त होती रहती है उसे दो श्रेणियां में बांटा जा सकता है।

1. जैविकीय विरासत
2. सामाजिक सांस्कृतिक विरासत

जैविकीय विरासत में व्यक्ति को अपने माता-पिता से शारीरिक लक्षण प्राप्त होते हैं तथा सामाजिक संस्कृति विरासत में व्यक्ति को भौतिक वस्तुएं प्राप्त होती हैं जैसे उनके पूर्वज के मकान 'जमीन जेवर' मशीन उपकरण आदि और भौतिक रूप में जो प्राप्त होते हैं जैसे धर्म' प्रथाएं' रीति रिवाज 'विश्वास आदि संस्कृत में परंपरा शब्द का अर्थ है -ऐतिह अर्थात विरासत में मिलना भारतीय परंपरा को जोड़ने मे वेद' पुराण और शास्त्रों की भू बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है हम आज भी उनके प्रभाव और आकर्षक से मुक्त नहीं हो पाए हैं और जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं। उन्हें भारतीय सभ्यता का अंग माना जाता है परंपराएं जब तेजी से बिछड़ने लगते हैं तब समाज में जातियों का ह्रास होने लगता है और धीरे-धीरे स्थितियां बिगड़ती ही जाती हैं और सामाजिक संरचना कमजोर पड़ने लगती है। परंपरा और संस्कृति का प्रयोग पर्याय एक ही संदर्भ में बहुत से लोग करते हैं। संस्कृत अधिक व्यापक अवधारणा है परंपराएं पिछली संस्कृति को दोहराते हुए चलने वाली हैं परंपरा शब्द का प्रयोग भी बहुत बहम उत्पन्न करने वाला है यदि देखा जाए तो कबीलों में भी स्थान 'गोत्र और वंश के आधार पर परंपराओं में अंतर पाया जाता है परंपराएं स्वयं ही समय-समय पर अपना मूल्यांकन कर अपनी दिशा बदलती हैं भारतीय समाज के विकास की प्रक्रिया कभी रुकी नहीं और प्रत्येक चरण में चुनौतियों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया हमेशा रचनात्मक रही है समय-समय पर विरोध और विद्रोह की परंपराएं भी विकसित होती रही हैं ऐतिहासिक दृष्टि से बदलाव के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना स्वरूप भी बदलने लगा छोटी-छोटी संस्कृतिक इकाई बदलते संदर्भों की नई जागृति का संदेश देने लगी विविध साहित्यिक धाराओं में परंपरा विद्यमान रहती है तथा एक इकाई की तरह प्रवाहमान रहती है। संस्कृत' प्राकृत' अपभ्रंश' हिंदी 'तमिल' तेलुगु तथा मराठी साहित्य में अनेक साहित्यिक आंदोलन एवं परिवर्तन हुए हैं ऋषि 'कवि तथा चिंतक इसे जैसे जब और जैसे चाहे अपनी समस्याओं का निदान तथा समाधान के लिए परंपरा का प्रयुक्त कर सकते हैं भारतीय साहित्य की प्रगतिशील चेतना में इसी की प्रतिक्रिया है।

**आधुनिकता** - आधुनिकता अंग्रेजी के मॉडर्निटी का समानधमी हिंदी शब्द है। आधुनिकता वह प्रक्रिया है जो नवीनता और नया करने का संदेश देती है। आधुनिकता मनुष्य के भौतिक जीवन से संबंधित नहीं होती बल्कि हमारे बौद्धिक स्तर

को भी प्रभावित करती है। आधुनिकता मानव संघर्ष को अंकित करती है। आधुनिकता केवल शहर गांव एवं कस्बे मे ही नहीं बँटी हुई बल्कि आधुनिकता का स्तर भौगोलिक परिधि को तोड़कर पूरे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। कई बार लोग आधुनिकता का अर्थ नई पीढ़ी के सोचने विचारने से लगा लेते हैं लेकिन आधुनिकता को बहन करने वाले लोग नई पीढ़ी के लोग ही नहीं है बल्कि कोई भी अपने जीवन में आधुनिकता को अपनाकर नई दिशा में सोच सकता है। हर युग हर आदमी अपने आप में आधुनिक होता है- डॉ.अनीता रावत के शब्दों में "आधुनिकता की प्रकृति में यह स्वयं सिद्ध स्थितियां हैं जो मानव जाति को एक वैश्विक एवं सार्वभौमिक स्तर पर उन अंतहीन अंत तक ला पटकती है जो लगातार पेचीदा व रोमांचक हैं"[1]

आधुनिकता को हम अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हैं आधुनिकता एक ऐसी प्रक्रिया या धारणा है। जो समग्र को एक साथ लेकर मानव के जीवन मूल्यों से जुड़ा रहकर उसे प्रभावित करती है। आधुनिकता का संबंध समाज के आधुनिकरण से होता है तथा समाज को विकास दिशा की ओर उन्मुलक्त करना होता है पर यह राष्ट्रीय और मानवीय प्रश्न भी है कि हम आधुनिकता की समस्या को संस्कृत की क्षति से जोड़ते हैं। तो दूसरी ओर आधुनिकरण से इसलिए आधुनिकता एक व्यवस्था विचार विधि एवं वृत्ति मूल्य चक्र में अभिहित होती है। आज जीवन के विविध क्षेत्रों में आधुनिकता एक बहुचर्चित विषय है। इस बहुचर्चित विषय आधुनिकता के संबंध में सबसे पहले हमे यह जानना आवश्यक है कि आधुनिकता क्या है उसके मूलभूत मूल तत्व क्या है उसके लक्षण क्या है। आधुनिकता काल सापेक्ष है अथवा विचार सापेक्ष यह स्थित्यात्मक है या गत्यात्मक? जिसे हम आधुनिकता कहते हैं वह एक प्रक्रिया का नाम है यह प्रक्रिया अंधविश्वास से बाहर निकालने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुंचने की प्रक्रिया है। आधुनिक वह है। जो मनुष्य को उसकी ऊंचाई, जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापती है।[2] आधुनिक वह है जो मनुष्य को समान समझना है आधुनिकता का संबंध मानव की नई चेतना से है जो आधुनिक स्थिति में विकसित होती है। आधुनिकता एक ऐसी विचारधारा है जिसकी निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि "सिद्धांत और व्यवहार में मैत्री होना आधुनिकता की नींव है"[3] निष्कर्ष यह है कि हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में सन 1900 के बाद) मात्रा और विविधता की दृष्टि से जितना साहित्य प्रकाश में आया उतना इससे पूर्व काल में नहीं इसमें देश -प्रेम सामाजिक चेतना 'मानवता यथार्थवादी चित्रण 'बौद्धिकता 'वादो का प्राचुर्य 'शैली की नवीनता आदि विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं। आधुनिकता सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन की विचार विधि है। "आधुनिकता मानसिक प्रत्ययों तथा सामाजिक दृश्य को समझने तथा विश्लेषित करने की विधि है ताकि विशेष देश काल के संदर्भ में मनुष्य सचेतन और स्वतंत्र होकर परिवर्तन भी कर सके"[4]

**उत्तर आधुनिकता**- उत्तर आधुनिकता पूर्ण रूप से एक स्वतंत्र विधा है। उत्तर आधुनिकता की अवधारणा को हम दूसरे शब्दों में उत्तर उपयोगवाद की संज्ञा दे सकते हैं। इसका प्रभाव तथा शक्ति आदि संसार के अनेक देशों में देखा जा सकता है। उत्तर आधुनिकता ने आधुनिकरण के मानकों को नकारा है और अनेक क्षेत्रों में फैले आधुनिकता के विचारों को अस्वीकार किया है। यहां तक की आधुनिकीकरण के सैद्धांतिक आधारों को उत्तर आधुनिकता ने अस्वीकार किया है। उत्तर आधुनिकता अधिक से अधिक बल' बाजार और साधन पर देता है उत्तर आधुनिकता का तात्पर्य आधुनिकता के बाद का विकास यह अवधारणा बहुत तेजी से आधुनिकता का स्थान ले रही है। साहित्य में कई प्रयोग आए उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी आयी मैक्स बेवर 'दुर्खीम 'परेटो 'मार्क्स और ऐसे कितने ही संस्थापक विचार आये। इनकी सोच ने जमाने की दिशा को बदल दिया उत्तर आधुनिकता ने संपूर्ण 20वीं शताब्दी के सामने एक ज्वलंत प्रश्न खड़े कर दिए कॉरपोरेट पूंजीवाद को मुश्किल में कर दिया है। अब एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है जिसकी लोकप्रियता बढ़ रही है। यह लोकप्रिय संस्कृति संचार की संस्कृति है यह संस्कृति 'सामाजिक 'आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई है। इसकी अभिव्यक्ति जीवन की विभिन्न शैलियों से जैसे कला ' साहित्य' दर्शन आदि मे देखने को मिलती है उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषताएं है कि वह युवाओं को अधिक प्रभावित करती है। यह युवाओ को अपने आपको आधुनिकता के बंधन से मुक्त करने लगी इसके परिणाम स्वरुप

एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है वह एक वर्ग इस बात पर जोर देता है उत्तर आधुनिकता की संक्षेप में निम्नलिखित विशेषताएं बताई जा सकती हैं

1. ज्ञान बेचने के लिए और सूचना विनिमय के लिए है।

2. सूचना उत्तर आधुनिकता के युग में सब कुछ है और इसके लिए अनेक समाज में दंन्द पाया जाता है सूचना पूंजी की तरह समझ में गतिमान होती है।

उत्तर आधुनिकता की चर्चा वैसे तो सन 1970 से 75 के आसपास होने लगी थी किंतु हमारे यहां किसी भी विचार को पहुंचने में समय लगता है। कहा जाता है कि जब पश्चिम में उत्तर आधुनिकता का मर-खप गई तब हमारे यहां उसकी चर्चा होने लगी वैसे उत्तर आधुनिकता एक आधुनिकता के बीच कोई बड़ी विभाजन रेखा नहीं है। सिवाय इसके कि कुछ चिंतकों ने कुछ बातें कहीं वे विज्ञान विरोधी हो गए अजीब सी बातें करने लगेध आधुनिकता ने हमें उपयोग की संस्कृति दी संग्रह को केंद्र में लिया उत्तर आधुनिकता ने हमें केंद्र से हटाया" उत्तर आधुनिकता ने 70 के दशक में साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश किया है भारतीय परिपेक्ष्य में उत्तर आधुनिकता मीडिया संचालित तथा बाजार निर्देशित तत्वों की प्रतिक्रियास्वरूप अस्तित्व में आयी उत्तर एवं आधुनिक अर्थात जब आधुनिकता से पूर्व उत्तर उपसर्ग लगाया जाता है तो हम सोचने पर विवश हो जाते हैं। कि जैसे यूरोपीय इतिहास का प्राचीन एवं मध्यकाल समाप्त हो गया इस तरह हम एक नए युग अर्थात उत्तर आधुनिक युग में पहुंच गए हैं। आज हमारे चारों तरफ जिन अराजक स्थितियों ने उत्पात मचाया है। उससे अनिश्चितता बर्बरता को बढ़ावा मिला है परंतु जहां विध्वंस दिख रहा है वहीं कुछ लाभ भी हो रहा है। जिसको अनदेखी नहीं किया जा सकता और जीवन तथा जगत मे कोई भी कार्य कीमत के बगैर पूरा नहीं होता है। जहां अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है वहीं पश्चिम के एकाधिकार को भी चुनौती मिल रही है साथ ही वर्गवादी और सामान्तशाही व्यवस्था को भी खारिज कर दिया गया है। जिससे हर वर्ग का व्यक्ति वैश्विक मानव के रूप में अपनी स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

**आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता एक विश्लेषण**- आदिकाल से ही परंपरा भारतीय समाज में सांस्कृतिक निरंतर एकता का प्रतीक रही है भारत गांव का देश कहा जाता है कृषि और ऋषि परंपरा यहां की मुख्य पहचान रही है। मनुष्य जो कुछ भी अपने बड़े बुजुर्गों से सीकते है वही विरासत में आगे भी पीढ़ी दर पीढ़ी प्राप्त होती रहती है उसे दो श्रेणियां में बांटा जा सकता है 1. जैविकीय विरासत 2. सामाजिक सांस्कृतिक विरासत'. जैविकीय विरासत में व्यक्ति को अपने माता-पिता से शारीरिक लक्षण प्राप्त होते हैं तथा सामाजिक संस्कृति विरासत में व्यक्ति को भौतिक वस्तुएं प्राप्त होती हैं। जैसे उनके पूर्वज के मकान 'जमीन जेवर' मशीन उपकरण आदि और भौतिक रूप में जो प्राप्त होते हैं जैसे धर्म' प्रथाएं' रीति रिवाज 'विश्वास आदि संस्कृत में परंपरा शब्द का अर्थ है -ऐतिह अर्थात विरासत में मिलना भारतीय परंपरा को जोड़ने मे वेद' पुराण और शास्त्रों की भू बहुत अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हम आज भी उनके प्रभाव और आकर्षक से मुक्त नहीं हो पाए हैं और जितने भी धार्मिक ग्रंथ हैं उन्हें भारतीय सभ्यता का अंग माना जाता है परंपराएं जब तेजी से बिछड़ने लगते हैं तब समाज में जातियों का हास होने लगता है। और धीरे-धीरे स्थितियां बिगड़ती ही जाती हैं और सामाजिक संरचना कमजोर पडने लगती है परंपरा और संस्कृति का प्रयोग पर्याय एक ही संदर्भ में बहुत से लोग करते हैं। संस्कृत अधिक व्यापक अवधारणा है परंपराएं पिछली संस्कृति को दोहराते हुए चलने वाली हैं परंपरा शब्द का प्रयोग भी बहुत बहम उत्पन्न करने वाला है यदि देखा जाए तो कबीलों में भी स्थान 'गोत्र और वंश के आधार पर परंपराओं में अंतर पाया जाता है परंपराएं स्वयं ही समय-समय पर अपना मूल्यांकन कर अपनी दिशा बदलती हैं। भारतीय समाज के विकास की प्रक्रिया कभी रुकी नहीं और प्रत्येक चरण में चुनौतियों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया हमेशा रचनात्मक रही है। समय-समय पर विरोध और विद्रोह की परंपराएं भी विकसित होती रही हैं ऐतिहासिक दृष्टि से बदलाव के साथ-साथ सांस्कृतिक चेतना स्वरूप भी बदलने लगा छोटी-छोटी संस्कृतिक इकाई बदलते संदर्भों की नई जागृति का संदेश देने लगी विविध साहित्यिक धाराओं में परंपरा विद्यमान रहती है तथा एक इकाई की तरह प्रवाहमान रहती है। संस्कृत' प्राकृत' अपभ्रंश' हिंदी 'तमिल' तेलुगु तथा मराठी साहित्य में अनेक साहित्यिक आंदोलन एवं परिवर्तन हुए हैं ऋषि 'कवि तथा चिंतक इसे जैसे जब और जैसे चाहे अपनी समस्याओं का निदान तथा समाधान के

लिए परंपरा का प्रयुक्त कर सकते हैं भारतीय साहित्य की प्रगतिशील चेतना में इसी की प्रतिक्रिया है।

**आधुनिकता** -आधुनिकता अंग्रेजी के मॉडर्निटी का समानधमी हिंदी शब्द है आधुनिकता वह प्रक्रिया है जो नवीनता और नया करने का संदेश देती है आधुनिकता मनुष्य के भौतिक जीवन से संबंधित नहीं होती बल्कि हमारे बौद्धिक स्तर को भी प्रभावित करती है आधुनिकता मानव संघर्ष को अंकित करती है आधुनिकता केवल शहर गांव एवं कस्बे मे ही नहीं बॅटी हुई बल्कि आधुनिकता का स्तर भौगोलिक परिधि को तोड़कर पूरे समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है कई बार लोग आधुनिकता का अर्थ नई पीढ़ी के सोचने विचारने से लगा लेते हैं लेकिन आधुनिकता को बहन करने वाले लोग नई पीढ़ी के लोग ही नहीं है बल्कि कोई भी अपने जीवन में आधुनिकता को अपनाकर नई दिशा में सोच सकता है हर युग हर आदमी अपने आप में आधुनिक होता है- डॉअनीता रावत के शब्दों में "आधुनिकता की प्रकृति में यह स्वयं सिद्ध स्थितियां हैं जो मानव जाति को एक वैश्विक एवं सार्वभौमिक स्तर पर उन अंतहीन अंत तक ला पटकती है जो लगातार पेचीदा व रोमांचक हैं" आधुनिकता को हम अपने-अपने ढंग से परिभाषित करते हैं आधुनिकता एक ऐसी प्रक्रिया या धारणा है जो समग्र को एक साथ लेकर मानव के जीवन मूल्यों से जुड़ा रहकर उसे प्रभावित करती है। "आधुनिकता एक अन्वेषण भी है जो हमें मिथक से यथार्थता की यात्रा की सही दिशा भी समझती है " आधुनिकता का संबंध समाज के आधुनिकरण से होता है तथा समाज को विकास दिशा की ओर उन्मुलक्त करना होता है पर यह राष्ट्रीय और मानवीय प्रश्न भी है कि हम आधुनिकता की समस्या को संस्कृत की क्षति से जोड़ते हैं तो दूसरी ओर आधुनिकरण से इसलिए आधुनिकता एक व्यवस्था विचार विधि एवं वृत्ति मूल्य चक्र में अभिहित होती है आज जीवन के विविध क्षेत्रों में आधुनिकता एक बहुचर्चित विषय है इस बहुचर्चित विषय आधुनिकता के संबंध में सबसे पहले हमे यह जानना आवश्यक है कि आधुनिकता क्या है उसके मूलभूत मूल तत्व क्या है उसके लक्षण क्या है आधुनिकता काल सापेक्ष है अथवा विचार सापेक्ष यह स्थित्यात्मक है या गत्यात्मक? जिसे हम आधुनिकता कहते हैं वह एक प्रक्रिया का नाम है यह प्रक्रिया अंधविश्वास से बाहर निकालने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया नैतिकता में उदारता बरतने की प्रक्रिया है यह प्रक्रिया धर्म के सही रूप पर पहुंचने की प्रक्रिया है आधुनिक वह है जो मनुष्य को उसकी ऊंचाई ' जाति या गोत्र से नहीं बल्कि उसके कर्म से नापती है आधुनिक वह है जो मनुष्य को समान समझना है आधुनिकता का संबंध मानव की नई चेतना से है जो आधुनिक स्थिति में विकसित होती है आधुनिकता एक ऐसी विचारधारा है जिसकी निश्चित परिभाषा नहीं की जा सकती लेकिन इतना अवश्य कहा जा सकता है कि "सिद्धांत और व्यवहार में मैत्री होना आधुनिकता की नींव है" निष्कर्ष यह है कि हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में सन 1900 के बाद) मात्रा और विविधता की दृष्टि से जितना साहित्य प्रकाश में आया उतना इससे पूर्व काल में नहीं इसमें देश -प्रेम सामाजिक चेतना 'मानवता यथार्थवादी चित्रण 'बौद्धिकता 'वादो का प्राचुर्य 'शैली की नवीनता आदि विशेषताएं दृष्टिगोचर होती हैं आधुनिकता सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक परिवर्तन की विचार विधि है "आधुनिकता मानसिक प्रत्ययों तथा सामाजिक दृश्य को समझने तथा विश्लेषित करने की विधि है ताकि विशेष देश काल के संदर्भ में मनुष्य सचेतन और स्वतंत्र होकर परिवर्तन भी कर सके"
उत्तर आधुनिकता- उत्तर आधुनिकता पूर्ण रूप से एक स्वतंत्र विधा है उत्तर आधुनिकता की अवधारणा को हम दूसरे शब्दों में उत्तर उपयोगवाद की संज्ञा दे सकते हैं इसका प्रभाव तथा शक्ति आदि संसार के अनेक देशों में देखा जा सकता है उत्तर आधुनिकता ने आधुनिकरण के मानकों को नकारा है और अनेक क्षेत्रों में फैले आधुनिकता के विचारों को अस्वीकार किया है यहां तक की आधुनिकीकरण के सैद्धांतिक आधारों को उत्तर आधुनिकता ने अस्वीकार किया है उत्तर आधुनिकता अधिक से अधिक बल' बाजार और साधन पर देता है उत्तर उत्तर आधुनिकता का तात्पर्य आधुनिकता के बाद का विकास यह अवधारणा बहुत तेजी से आधुनिकता का स्थान ले रही है साहित्य में कई प्रयोग आए उच्च स्तर की प्रौद्योगिकी आयी मैक्स बेबर 'दुर्खीम 'परेटो 'मार्क्स और ऐसे कितने ही संस्थापक विचार आये। इनकी सोच ने जमाने की दिशा को बदल दिया उत्तर आधुनिकता ने संपूर्ण 20वीं शताब्दी के सामने एक ज्वलंत प्रश्न खड़े कर दिए कॉरपोरेट पूंजीवाद को मुश्किल में कर दिया है अब एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है जिसकी लोकप्रियता बढ़ रही है यह लोकप्रिय संस्कृति संचार की संस्कृति है यह संस्कृति 'सामाजिक 'आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ी हुई है इसकी अभिव्यक्ति जीवन की विभिन्न शैलियों से जैसे कला

'साहित्य' दर्शन आदि मे देखने को मिलती है उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषताएं है कि वह युवाओं को अधिक प्रभावित करती है यह युवाओ को अपने आपको आधुनिकता के बंधन से मुक्त करने लगी इसके परिणाम स्वरुप एक नई संस्कृति का उदय हो रहा है वह एक वर्ग इस बात पर जोर देता है उत्तर आधुनिकता की संक्षेप में निम्नलिखित विशेषताएं बताई जा सकती हैं1- ज्ञान बेचने के लिए और सूचना विनिमय के लिए है।

2- सूचना उत्तर आधुनिकता के युग में सब कुछ है और इसके लिए अनेक समाज में दंन्द पाया जाता है सूचना पूंजी की तरह समझ में गतिमान होती है 3. हम कला 'साहित्य' राष्ट्र' राज्य इतिहास आदि का अंत देख रहे हैं 4. वर्तमान युग को हम पूंजी और तकनीकी के विकास का योग कहते हैं और साथ ही साथ एक अंत का युग है उत्तर आधुनिकता की चर्चा वैसे तो सन 1970 से 75 के आसपास होने लगी थी किंतु हमारे यहां किसी भी विचार को पहुंचने में समय लगता है कहा जाता है कि जब पश्चिम में उत्तर आधुनिकता का मर -खप गई तब हमारे यहां उसकी चर्चा होने लगी वैसे उत्तर आधुनिकता एक आधुनिकता के बीच कोई बड़ी विभाजन रेखा नहीं है सिवाय इसके कि कुछ चिंतकों ने कुछ बातें कहीं वे विज्ञान विरोधी हो गए अजीब सी बातें करने लगे आधुनिकता ने हमें उपयोग की संस्कृति दी संग्रह को केंद्र में लिया उत्तर आधुनिकता ने हमें केंद्र से हटाया" उत्तर आधुनिकता ने 70 के दशक में साहित्यिक परिदृश्य में प्रवेश किया है भारतीय परिपेक्ष्य में उत्तर आधुनिकता मीडिया संचालित तथा बाजार निर्देशित तत्वों की प्रतिक्रियास्वरूप अस्तित्व में आयी उत्तर एवं आधुनिक अर्थात जब आधुनिकता से पूर्व उत्तर उपसर्ग लगाया जाता है तो हम सोचने पर विवश हो जाते हैं कि जैसे यूरोपीय इतिहास का प्राचीन एवं मध्यकाल समाप्त हो गया इस तरह हम एक नए युग अर्थात उत्तर आधुनिक युग में पहुंच गए हैं आज हमारे चारों तरफ जिन अराजक स्थितियों ने उत्पात मचाया है उससे अनिश्चितता बर्बरता को बढ़ावा मिला है परंतु जहां विध्वंस दिख रहा है वहीं कुछ लाभ भी हो रहा है जिसको अनदेखी नहीं किया जा सकता और जीवन तथा जगत मे कोई भी कार्य कीमत के बगैर पूरा नहीं होता है जहां अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है वहीं पश्चिम के एकाधिकार को भी चुनौती मिल रही है साथ ही वर्गवादी और सामान्तशाही व्यवस्था को भी खारिज कर दिया गया है जिससे हर वर्ग का व्यक्ति वैश्विक मानव के रूप में अपनी स्वतंत्र अस्मिता को स्थापित करने का प्रयास करना कर रहा है यही उत्तर आधुनिकता का महत्व है जो उसे नवीन अर्थवत्ता है उत्तर आधुनिकता से हम कह सकते हैं कि इसमें दलित पिछड़े अपेक्षित समलैंगिक स्त्रियों और उपेक्षित लोगों को केंद्र में लाने का कार्य किया है तथा निसंदेह यह प्रशंसनीय है समस्त विरोधाभासों को सहते हुए समस्याओं को व्यापक पर दृश्य में प्रस्तुत करने का कार्य उत्तर आधुनिक साहित्य में ही संभव है अतीत के साथ वर्तमान की संगति बिठाकर भविष्य के लिए मार्ग सुगम करने की क्षमता उसमें दिखाई देती है इसलिए उसका महत्व निर्विवाद होना चाहिए संदर्भ सूची-1- डॉ वीरेंद्र सिंह यादव- उत्तर आधुनिकरणता विचार और मूल्यांकन पेज सं 3 2- वही पेज सं 6 3- डॉ शुभा वाजपेई -साहित्य परंपरा और आधुनिकता पेज सं11 4- वही पेज सं13 5-वही पेज सं14 6- डॉ सी विश्वनाथन -मोहन राकेश की रचनाओं में आधुनिक भावबोध पेज सं27 7- डॉ प्रेम सिंह के क्षत्रिय-वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक बोध पेज सं 7 8- वहीं पेज सं 8 9-डॉ पी के जयलक्ष्मी सप्तक त्रय मे आधुनिकता पेज सं 13 10-डॉ कविता त्यागी भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता पेज सं 16 11- वही पेज सं 52 12- वही पेज सं 53 13-डॉ वीरेंद्र सिंह यादव -उत्तर आधुनिकता विचार और मूल्यांकन पेज सं 30 14-वहीं पेज सं 32 15- डॉ मीना खरात उत्तर आधुनिकता और मनोहर श्याम जोशी पेज सं 75 16- वहीं पेज सं 76 17- वही पेज सं 77

## संदर्भ सूची

1. डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव- उत्तर आधुनिकरणता विचार और मूल्यांकन पेज सं 3
2. वही पेज सं 6
3. डॉ. शुभा वाजपेई -साहित्य परंपरा और आधुनिकता पेज सं11

4. वही पेज सं13
5. डॉ. सी विश्वनाथन -मोहन राकेश की रचनाओं में आधुनिक भावबोध पेज सं27
6. डॉ. प्रेम सिंह के क्षत्रिय-वृंदावन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में आधुनिक बोध पेज सं 7
7. वही, पेज सं 8
8. डॉ. पी के जयलक्ष्मी सप्तक त्रय मे आधुनिकता पेज सं 13
9. डॉ. कविता त्यागी भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में आधुनिकता पेज सं 16
10. वही पेज सं 52
11. वही पेज सं 53
12. डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव -उत्तर आधुनिकता विचार और मूल्यांकन पेज सं 30